नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 132
दि. 14.02.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

तमिलनाडु में स्टालिन का बड़ा दांव, 1.31 करोड़ महिलाओं को 5,000 रुपये की अग्रिम सहायता

(जीएनएस)। चेन्नई। M. K. Stalin के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार ने राज्य की 1.31 करोड़ महिला लाभार्थियों के खातों में 5,000 रुपये की राशि ट्रांसफर कर एक बड़ा राजनीतिक और सामाजिक संदेश दिया है। यह राशि राज्य सरकार की 'कलाइग्नार महिला पात्रता योजना' के तहत दी गई है। सरकार का कहना है कि यह कदम महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और मासिक सहायता में किसी भी संभावित व्यवधान को रोकने के उद्देश्य से उठाया गया है।

मुख्यमंत्री ने एक वीडियो संदेश जारी कर बताया कि यह धनराशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेज दी गई है और अधिकांश महिलाओं को शुक्रवार सुबह तक यह राशि प्राप्त हो जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आगामी चुनावों को देखते हुए योजना को बाधित करने की आशंका के मद्देनजर सरकार ने एहतियाती तौर पर अग्रिम भुगतान करने का निर्णय लिया। उनके अनुसार, फरवरी से शुरू होने वाली तीन महीनों की सहायता राशि एकमुश्त अग्रिम के रूप में जारी की गई है, ताकि किसी भी प्रशासनिक या राजनीतिक कारण से लाभार्थियों को असुविधा न हो।

तमिलनाडु में महिलाओं को प्रति माह 1,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना का उद्देश्य घरेलू स्तर पर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और निर्णय क्षमता को मजबूत करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गर्मी के मौसम में बढ़ते घरेलू खर्चों को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त सहायता भी शामिल की गई है। उन्होंने लाभार्थियों से अपील की कि वे इस राशि का उपयोग बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य आवश्यक जरूरतों के लिए करें।

राजनीतिक दृष्टि से भी यह घोषणा महत्वपूर्ण मानी जा रही है। मुख्यमंत्री ने यह भी एलान किया कि यदि आगामी विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी Dravida Munnetra Kazhagam दोबारा सत्ता में आती है, तो वर्तमान 1,000 रुपये की मासिक सहायता को बढ़ाकर 2,000 रुपये कर दिया जाएगा। इस बयान को चुनावी रणनीति के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि राज्य में अगले विधानसभा चुनाव की तैयारियां धीरे-धीरे तेज हो रही हैं।

विपक्षी दलों ने इस कदम पर सवाल उठाए हैं। खासतौर पर Vijay, जो Tamilaga Vettri Kazhagam (टीवीके) के प्रमुख हैं, ने जनसभा में सत्ताधारी दल पर निशाना साधते हुए इसे चुनावी प्रभाव डालने का प्रयास बताया। विजय ने मंच से लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि उनका वोट उनका अधिकार है और किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता के बदले वोट नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने समर्थकों से कहा कि वे सहायता राशि लें, लेकिन मतदान अपनी इच्छा और विवेक से करें।

विजय ने यह भी सवाल उठाया कि अचानक 'समर स्पेशल पैकेज' की घोषणा क्यों की गई। उन्होंने तंज करते हुए कहा कि गर्मी हर साल आती है, तो फिर इस साल विशेष पैकेज की जरूरत क्यों पड़ी। उनका दावा है कि उनकी पार्टी को विशेष रूप से महिलाओं का बढ़ता समर्थन मिल रहा है और इसी कारण सरकार ने जल्दबाजी में राशि जारी की है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी का चुनाव चिन्ह 'सीटी' है और जनता का समर्थन लगातार बढ़ रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि महिलाओं को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता देने की योजनाएं हाल के वर्षों में कई राज्यों में प्रभावी चुनावी रणनीति के रूप में उभरी हैं। ऐसे कदमों से महिला मतदाताओं के बीच सरकार की सकारात्मक छवि बनाने में मदद मिलती है। तमिलनाडु में महिला मतदाताओं की संख्या और उनकी राजनीतिक भागीदारी काफी महत्वपूर्ण मानी जाती है, इसलिए यह कदम चुनावी दृष्टि से निर्णायक साबित हो सकता है।

सरकार का पक्ष है कि यह योजना पूरी तरह सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित है और इसका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। अधिकारियों के अनुसार, लाभार्थियों की पहचान पूर्व निर्धारित मानकों के आधार पर की गई है और पूरी प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से पारदर्शी तरीके से संपन्न की गई है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के जरिए राशि सीधे खातों में भेजी गई, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो जाती है।

इस बीच राज्य में राजनीतिक माहौल गरमाता नजर आ रहा है। जहां सत्तारूढ़ दल इसे महिला सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम बता रहा है, वहीं विपक्ष इसे चुनावी लाभ लेने की कोशिश के रूप में देख रहा है। आने वाले महीनों में जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आएंगे, इस तरह की घोषणाएं और राजनीतिक बयानबाजी और तेज होने की संभावना है।

फिलहाल, 1.31 करोड़ महिलाओं के खातों में 5,000 रुपये की राशि पहुंच चुकी है और इसका सीधा प्रभाव राज्य के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पर पड़ना तय माना जा रहा है। यह देखना दिलचस्प होगा कि यह आर्थिक पहल आगामी चुनावी समीकरणों को किस हद तक प्रभावित करती है।

तबादला या सजा? कैप्टन अमरिंदर को समन भेजने वाले ईडी अधिकारी का चेन्नई ट्रांसफर, पंजाब की राजनीति में उबाल

(जीएनएस)। जालंधर। पंजाब की सियासत में उस समय नया मोड़ आ गया जब प्रवर्तन निदेशालय द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री Amarinder Singh और उनके बेटे रणइंदर सिंह को नोटिस जारी किए जाने के तुरंत बाद एजेंसी के एक वरिष्ठ अधिकारी का तबादला कर दिया गया। समन जारी करने वाले ईडी के एडिशनल डायरेक्टर रवि तिवारी (आईआरएस) को जालंधर जोन से हटाकर करीब 2700 किलोमीटर दूर चेन्नई भेज दिया गया है। इस प्रशासनिक फैसले की टाइमिंग को लेकर राजनीतिक हलकों में कई तरह के सवाल उठने लगे हैं और इसे लेकर चर्चाओं का दौर तेज हो गया है।

सूत्रों के अनुसार, रवि तिवारी वही अधिकारी हैं जिन्होंने हाल ही में कैप्टन अमरिंदर सिंह और उनके बेटे को विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम से जुड़े मामले में पेश होने के लिए समन जारी किया था। समन जारी होने के कुछ ही समय बाद उनका जालंधर से तबादला कर दिया जाना कई लोगों को असामान्य प्रतीत हो रहा है।

हालांकि, अब तक न तो Enforcement Directorate और न ही केंद्र सरकार की ओर से इस तबादले के कारणों पर कोई आधिकारिक बयान जारी किया गया है।

ईडी ने दोनों को Foreign Exchange Management Act (फेमा) से जुड़े एक पुराने मामले में पूछताछ के लिए बुलाया था। इस कार्रवाई के बाद राजनीतिक माहौल पहले ही गरमाया हुआ था। ऐसे में संबंधित अधिकारी का अचानक स्थानांतरण होने से मामले को लेकर अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। विपक्षी दल इसे दबाव की राजनीति से जोड़कर देख रहे हैं, जबकि कुछ विश्लेषक इसे नियमित प्रशासनिक प्रक्रिया भी मान रहे हैं। फिलहाल आधिकारिक स्पष्टता के अभाव में यह मुद्दा राजनीतिक बहस का केंद्र बन गया है। पंजाब की राजनीति में यह घटनाक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि कैप्टन अमरिंदर सिंह राज्य के अनुभवी और प्रभावशाली नेता रहे हैं। उनके खिलाफ किसी भी केंद्रीय एजेंसी की कार्रवाई स्वाभाविक रूप से राजनीतिक चर्चा का विषय बन जाती है। समन के बाद घटनाक्रम ने नया मोड़ तब लिया जब अधिकारी का ट्रांसफर आदेश सामने आया। सूत्रों का कहना है कि एजेंसी के भीतर भी इस अचानक हुए फैसले को लेकर चर्चाएं हैं, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

इस बीच कैप्टन अमरिंदर सिंह स्वास्थ्य कारणों से अस्पताल में भर्ती हैं। हाल ही में घुटने के दर्द के चलते उनका ऑपरेशन हुआ और वे उपचाराधीन हैं। अस्पताल में उनसे मिलने कई राजनीतिक हस्तियां पहुंचीं। हरियाणा के वरिष्ठ भाजपा नेता Anil Vij ने भी उनसे मुलाकात की। इसके अलावा पंजाब भाजपा संगठन के महासचिव श्रीनिवासुलु ने भी अस्पताल जाकर उनका हालचाल जाना। इन मुलाकातों को भी राजनीतिक नजरिए से देखा जा रहा है, हालांकि आधिकारिक तौर पर इन्हें शिष्टाचार भेंट बताया गया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई और उसके बाद होने वाले प्रशासनिक फैसले अक्सर राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन जाते हैं। ऐसे मामलों में पारदर्शिता और स्पष्ट संचार बेहद महत्वपूर्ण होता है, ताकि किसी भी तरह की गलतफहमी या अटकलों को रोका जा सके। फिलहाल इस तबादले को लेकर कई सवाल अनुत्तरित हैं—क्या यह एक नियमित प्रशासनिक फेरबदल है या फिर समन की कार्रवाई से जुड़ा कोई अन्य कारण? इस पर स्थिति स्पष्ट होने का इंतजार है।

पंजाब में विपक्षी दलों ने इस मुद्दे पर सरकार से स्पष्टीकरण की मांग की है। उनका कहना है कि यदि यह महज नियमित तबादला है तो इसकी प्रक्रिया और कारण सार्वजनिक किए जाने चाहिए। वहीं सत्ताधारी पक्ष का तर्क है कि प्रशासनिक तबादले सेवा का सामान्य हिस्सा होते हैं और उन्हें राजनीतिक रंग नहीं दिया जाना चाहिए।

कुल मिलाकर, कैप्टन अमरिंदर सिंह को फेमा मामले में समन, उसके बाद ईडी अधिकारी का जालंधर से चेन्नई स्थानांतरण और अस्पताल में राजनीतिक मुलाकातों की श्रृंखला ने पंजाब की राजनीति को एक बार फिर गर्मा दिया है। आने वाले दिनों में यदि इस तबादले को लेकर आधिकारिक बयान आता है तो तस्वीर और स्पष्ट हो सकती है। फिलहाल यह मामला राजनीतिक गलियारों में चर्चा और कयासों का केंद्र बना हुआ है।

राहुल गांधी के खिलाफ प्रस्ताव नहीं लाएगी सरकार, निजी नोटिस पर आगे बढ़ेगी प्रक्रिया

(जीएनएस)। नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता Rahul Gandhi के खिलाफ प्रस्ताव लाने की अटकलों के बीच केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि वह स्वयं कोई अलग प्रस्ताव पेश नहीं करेगी। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री Kiren Rijiju ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमंत्री Narendra Modi के खिलाफ कथित असंसदीय भाषा के उपयोग के मुद्दे पर सरकार ने प्रस्ताव लाने की अपनी योजना छोड़ दी है, क्योंकि भाजपा के एक सांसद पहले ही इस विषय पर एक विशिष्ट प्रस्ताव के लिए नोटिस दे चुके हैं।

रीजीजू ने संवाददाताओं से बातचीत में बताया कि चूंकि एक सदस्य ने निजी तौर पर प्रस्ताव का नोटिस दे दिया है, इसलिए सरकार समानांतर रूप से अलग प्रस्ताव लाने से बचेगी। उन्होंने कहा कि अब यह निर्णय लोकसभा अध्यक्ष के विवेक पर होगा कि मामले को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने संकेत दिया कि इस विषय पर अध्यक्ष से परामर्श लिया जाएगा कि क्या इसे सदन की विशेषाधिकार समिति को भेजा जाए, आचार समिति को संदर्भित किया जाए या सीधे लोकसभा में चर्चा के लिए लाया जाए। मंत्री ने स्पष्ट किया, "अभी यह तय नहीं हुआ है।"

इस बीच, भाजपा सांसद Nishikant Dubey ने गुरुवार को कहा था कि उन्होंने राहुल गांधी के खिलाफ 'विशिष्ट प्रस्ताव' लाने के लिए नोटिस दिया है। दुबे ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री के प्रति की गई टिप्पणियां सदन की गरिमा के प्रतिकूल हैं। उन्होंने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की सदस्यता समाप्त करने और उन्हें आजीवन चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित करने की मांग भी की है। हालांकि, इस मांग पर अंतिम निर्णय संसदीय प्रक्रिया के तहत ही लिया जाएगा।

संसदीय कार्यवाही के जानकारों के अनुसार, किसी सदस्य के खिलाफ विशेषाधिकार हनन या आचार संहिता उल्लंघन के मामले में प्रक्रिया निर्धारित नियमों के तहत संचालित होती है। लोकसभा अध्यक्ष प्रारंभिक परीक्षण के बाद यह तय करते हैं कि मामला स्वीकार किया जाए या नहीं, और यदि स्वीकार किया जाता है तो उसे संबंधित समिति को भेजा जा सकता है। समिति की रिपोर्ट के आधार पर ही आगे की कार्रवाई तय होती है। राजनीतिक दृष्टि से यह मुद्दा संसद के भीतर और बाहर दोनों जगह चर्चा का विषय बना हुआ है। कांग्रेस ने अब तक आरोपों को राजनीतिक प्रतिशोध का हिस्सा बताया है, जबकि भाजपा का कहना है कि सदन की मर्यादा और भाषा की शालीनता बनाए रखना सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है।

सरकार के इस फैसले से स्पष्ट है कि वह सीधे तौर पर प्रस्ताव लाकर टकराव की स्थिति नहीं बनाना चाहती, बल्कि संसदीय नियमों के तहत निजी सदस्य द्वारा दिए गए नोटिस की प्रक्रिया को आगे बढ़ने देना चाहती है। अब निगाहें लोकसभा अध्यक्ष के निर्णय पर टिकी हैं कि इस मामले को किस दिशा में ले जाया जाएगा और क्या यह समिति स्तर पर जाएगा या सदन में विस्तृत चर्चा का विषय बनेगा।

धोखाधड़ी मामले में फिल्ममेकर विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी को सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत, 30 करोड़ रुपये की कथित हेरफेर का आरोप

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सर्वोच्च अदालत ने फिल्म निर्देशक Vikram Bhatt और उनकी पत्नी श्वेतांबरी भट्ट को धोखाधड़ी और आपराधिक विश्वासघात के मामले में अंतरिम जमानत प्रदान की है। शुक्रवार को सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने दोनों को राहत देते हुए श्वेतांबरी भट्ट को उदयपुर जेल से तत्काल रिहा करने का आदेश दिया। यह आदेश मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (सीजेएम) को आवश्यक जमानती औपचारिकताएं पूरी करने के निर्देश के साथ जारी किया गया। मामले की सुनवाई कर रही पीठ में मुख्य न्यायाधीश Surya Kant और न्यायमूर्ति Joymalya Bagchi शामिल थे। अदालत ने स्पष्ट किया कि जमानत आदेश पारित करते समय नियम और शर्तों को स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया जाए। साथ ही शीर्ष अदालत ने शिकायतकर्ता Ajay Murdia और राजस्थान सरकार को 19 फरवरी के लिए नोटिस जारी किया है, ताकि वे इस मामले में अपना पक्ष रख सकें। अजय मुर्डिया उदयपुर निवासी हैं और Indira IVF एंड फर्टिलिटी सेंटर के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। यह मामला कथित तौर पर एक फिल्म निर्माण परियोजना से जुड़ा है, जिसके नाम पर निवेश और धनराशि के लेनदेन का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि फिल्म निर्माण के बहाने लगभग 30 करोड़ रुपये की राशि ली गई और उसका दुरुपयोग किया गया। शिकायत में कहा गया है कि विभिन्न नामों से कथित तौर पर फर्जी बिल तैयार किए गए और धनराशि को आरोपियों के निजी खातों में ट्रांसफर कराया गया। आरोपों में यह भी कहा गया है कि इस धन का उपयोग निजी उद्देश्यों के लिए किया गया। इस मामले में विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी के अलावा उदयपुर निवासी दिनेश कटारिया और विक्रम भट्ट के मैनेजर महबूब अंसारी को भी राजस्थान पुलिस ने 7 दिसंबर 2025 को गिरफ्तार किया था। मुंबई में गिरफ्तारी के बाद सभी आरोपियों को उदयपुर लाया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था। इसके बाद से वे जेल में बंद थे। इससे पहले 31 जनवरी को Rajasthan High Court ने विक्रम भट्ट और श्वेतांबरी भट्ट की जमानत याचिका खारिज कर दी थी। हाई कोर्ट ने अपने आदेश में टिप्पणी की थी कि मामले की गंभीरता को देखते हुए उस समय जमानत देना उचित नहीं होगा। अदालत ने माना था कि आरोप वित्तीय लेनदेन और बड़े पैमाने पर धनराशि से जुड़े हैं, इसलिए जांच की प्रक्रिया प्रभावित न हो, इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम राहत देते हुए कहा कि मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए आरोपियों को फिलहाल अंतरिम जमानत दी जा सकती है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि यह अंतिम निर्णय नहीं है और आगे की सुनवाई के बाद मामले की दिशा तय होगी। अंतरिम जमानत का अर्थ है कि आरोपियों को अस्थायी रूप से राहत दी गई है, जबकि मुकदमे की कार्यवाही और जांच जारी रहेगी। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, वित्तीय धोखाधड़ी और आपराधिक विश्वासघात के मामलों में अदालतें कई पहलुओं पर विचार करती हैं, जिनमें आरोपों की गंभीरता, साक्ष्यों की स्थिति, जांच की प्रगति और आरोपियों के सहयोग की भूमिका शामिल होती है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतरिम जमानत दिए जाने का अर्थ यह नहीं है कि आरोप निरस्त हो गए हैं, बल्कि यह न्यायिक प्रक्रिया के दौरान अस्थायी राहत का प्रावधान है।

विक्रम भट्ट हिंदी फिल्म उद्योग के चर्चित निर्देशकों में रहे हैं और उन्होंने कई थ्रिलर और हॉरर फिल्मों का निर्देशन किया है। उनके खिलाफ दर्ज इस मामले ने फिल्म उद्योग में भी हलचल पैदा की थी। अब सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत के बाद मामले पर कानूनी बहस और तेज होने की संभावना है।

आने वाले दिनों में जब शिकायतकर्ता और राज्य सरकार अपना पक्ष सर्वोच्च अदालत के समक्ष रखेंगी, तब यह स्पष्ट होगा कि आगे की न्यायिक प्रक्रिया किस दिशा में बढ़ेगी। फिलहाल, अदालत के आदेश के बाद श्वेतांबरी भट्ट की रिहाई का मार्ग प्रशस्त हो गया है और विक्रम भट्ट को भी अंतरिम राहत मिल चुकी है। मामले की अगली सुनवाई 19 फरवरी को प्रस्तावित है, जहां इस बहुचर्चित वित्तीय विवाद पर आगे की सुनवाई होगी।

संपादकीय

पंजाब-हरियाणा के किसान ऋण दुश्चक्र में

गांधी जी अक्सर कहा करते थे कि भारत की आत्मा गांव और खेतीकिसानी में बसती है। लेकिन आजादी के बाद भी कृषि क्षेत्र की विसंगतियां व विरोधाभास अंतिम रूप से दूर नहीं हुए। भले ही किसान दमनकारी साहूकारों के चंगुल से किसी हद तक मुक्त हो गए हों, लेकिन धीरे-धीरे सरकारी, सहकारी और अन्य वित्तीय संस्थानों के कर्ज तले दबते चले गए। फिलहाल सकारात्मक पक्ष यह है कि केंद्र सरकार रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन, डिजिटल तकनीकों से खेती के तौर-तरीकों में बदलाव और ऋण विस्तार को आसान बनाने के लिये प्रयत्नशील है। लेकिन नकारात्मक पक्ष यह है कि किसान कर्ज के दुश्चक्र में फंसता जा रहा है। यह कड़वी सच्चाई हाल रिपोर्ट से प्रकाश में आए आंकड़ों से उजागर हुई है। पिछले दिनों प्रकाशित रिपोर्ट में यह चिंताजनक तथ्य सामने आया है कि अनाज के भंडार के रूप से प्रसिद्ध राज्य पंजाब व हरियाणा के किसान देश के सबसे ज्यादा ऋणग्रस्त राज्यों में शुमार हैं। हाल में जारी रिपोर्ट के अनुसार पंजाब व हरियाणा में प्रति कृषि परिवार पर 2.03 लाख और 1.83 लाख रुपये का ऋण बकाया है। जो देश में सबसे ज्यादा ऋण लेने वाले राज्यों में तीसरा व चौथा स्थान बनता है। यह स्थिति तब है जब ऋण का यह राष्ट्रीय औसत 74, 121 रुपये है। केवल आंध्र प्रदेश और केरल में ही इससे अधिक ऋण का बोझ दर्ज किया गया है। वहीं दूसरी ओर नागालैंड, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में कृषि ऋण नगण्य ही है। यह स्थिति भारतीय कृषि में गहरे संरचनात्मक असुंतलन को ही उजागर करती है। निस्संदेह, पंजाब और हरियाणा में किसान परिवारों पर भारी कर्ज कोई महज संयोग नहीं है। निर्विवाद रूप से पंजाब व हरियाणा ने देश में हरित क्रांति का नेतृत्व किया है। इन राज्यों ने समय की जरूरत के हिसाब से बहुउपयोगी कृषि को अपनाया है और भारत की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ बने हैं। मगर विषम परिस्थितियों के चलते इसका अपेक्षित लाभ किसानों को नहीं मिल पाया।

लेकिन यह एक हकीकत है कि हाल के दशकों में खेती का यह मॉडल काफी दबाव में आ गया है। खेती-किसानी की लगातार बढ़ती लागत, स्थिर कृषि आय, छोटी और खंडित भू-जोत, अनियमित मानसून, खरीद प्रक्रिया में देरी और बढ़ते घरेलू खर्च ने ऋण पर निर्भरता का दुश्चक्र स्थापित कर दिया है। इसमें दो राय नहीं कि देश में संस्थागत ऋण की आसान उपलब्धता ने इन राज्यों में कृषि उत्पादकता को बढ़ावा दिया है। लेकिन यह भी एक कड़वी हकीकत है कि ऋण की सहज उपलब्धता ने किसानों के जीवनयापन के साधन के रूप में उधार लेने की प्रक्रिया को सामान्य स्थिति बना दिया है। किसान खेती-किसानी की जरूरतों से इतर भी बड़े पैमाने पर ऋण लेने लगे। वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार दावा करती रही है कि वह किसानों के हितों को हमेशा ही प्राथमिकता देती रही है। किसानों के जीवन में बदलाव के लिये 84.8 करोड़ किसानों के लिये डिजिटल आईडी, भौगोलिक संदर्भ पर आधारित फसल सर्वेक्षण और सुव्यवस्थित प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण से दक्षता और पारदर्शिता का वायदा किया जा रहा है। भारत के केंद्रीय बैंक आरबीआई द्वारा किसान क्रेटिड कार्ड योजना में प्रस्तावित सुधार-फसल चक्र के साथ ऋण की अवधि को संरेखित करना- इस बात का संकेत है कि ऋण को बदलती कृषि परिस्थितियों के अनुरूप विकसित किया जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी और बेहतर ढंग से डिजाइन किए गए ऋण स्वागत योग्य कदम है। लेकिन ये प्रावधान अकेले ही गहरी जड़ें जमा चुके ऋण संकट की समस्या को दूर नहीं कर सकते हैं। यह कटु सत्य है कि यदि आय लागत के अनुरूप नहीं बढ़ती, यदि बदलते हालत में फसल विविधीकरण के प्रयास सिरे नहीं चढ़ते तथा देश में यदि जलवायु परिवर्तन का चक्र तेज होता है, तो ऋणों का दबाव बना रहेगा। अब चाहे ऋण कितनी भी कुशलता से संचालित किए जाएं। बहरहाल, ऐसे में केंद्र और राज्य सरकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे देश के अन्नदाता को ऋण संकट के गंभीर जाल से बाहर निकालने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करें।

उत्तर कोरिया में नये वारिस की तैयारी

> "किम जू ए 2022 में एक मिसाइल लॉन्च वाले कार्यक्रम में अपने पिता के साथ पहली बार पब्लिक में दिखीं। उनके पब्लिक में आने के बाद से, कुछ एनालिस्ट ने अंदाजा लगाया कि उन्हें उत्तर कोरिया का नेतृत्व करने के लिए वारिस के तौर पर ट्रेनिंग दी जा रही है।

जू ए को उत्तर कोरिया की नई पीढ़ी बहुत बेहतर से जानने लगी है। सर्वोच्च नेता किम जोंग उन, अपनी इस लाड़ली बेटी को भावी शासक के रूप में तैयार करने में लगे हुए हैं। लेकिन क्या जू ए की उम्र 17 पार कर चुकी है? यह सवाल इसलिए, क्योंकि किम जोंग उन ने अपनी इस बेटी की वास्तविक उम्र का खुलासा नहीं किया है। 2022 में कोरियन मीडिया ने इंटेलिजेंस एजेंसियों के हवाले से 12 या 13 साल का बताया, तब भी नॉर्थ कोरिया के तानाशाह व सुप्रीम लीडर किम जोंग उन की तरफ से कोई स्पष्टीकरण नहीं आया था। प्योंगयांग में एक राजप्रासाद है, 'कुमसुसान पैलेस ऑफ द सन', इस महल को 'जुचे का सर्वोच्च मंदिर' भी कहा जाता है, जहां चिर निद्रा में विराजे नेताओं, किम इल सुंग और किम जोंग इल के शव संरक्षित हैं। इस समाधि स्थल में प्रवेश की आयु 17 साल सुनिश्चित की गई है। इससे कम का युवा, यहां प्रवेश नहीं कर सकता।

यह महल किम इल सुंग के आधिकारिक निवास के रूप में जाना जाता था। वर्ष 1994 में किम इल सुंग की मृत्यु के बाद, इमारत का जीर्णोद्धार किया गया और इसे उनके समाधि स्थल में बदल दिया गया। उत्तर कोरिया के सरकारी मीडिया ने 1 जनवरी, 2026 को नव वर्ष समारोह की एक तस्वीर जारी की, जिसमें किम जू ए अपने माता-पिता के साथ सबसे आगे की लाइन में खड़ी थीं। उन्होंने 'कुमसुसन पैलेस ऑफ़ द सन' में अपने दिवंगत दादा और परदादा के शवों के आगे सिर नवाया।

किम जू ए 2022 में एक मिसाइल लॉन्च वाले कार्यक्रम में अपने पिता के साथ पहली बार पब्लिक में दिखीं। उनके पब्लिक में आने के बाद से, कुछ एनालिस्ट ने अंदाज़ा लगाया कि उन्हें उत्तर कोरिया का नेतृत्व करने के लिए वारिस के तौर पर ट्रेनिंग दी जा रही है, जबकि दूसरे विश्लेषक अलग-अलग संभावित वारिसों की ओर इशारा करते हैं। 2025 में भी किम जू ए, पेइचिंग में आयोजित चीनी विजय

दिवस परेड में दिखीं। तानाशाह किम जोंग उन अपने पारंपरिक सहयोगी शी और पुतिन के बीच संतुलन बनाये रखते हुए अपनी स्थिति मज़बूत करने की कवायद में रहते हैं। लेकिन इन दोनों सहयोगियों के आगे भी अपनी बेटी की उम्र का खुलासा नहीं किया है। अगले दिन वह पब्लिक में नहीं दिखीं, क्योंकि उनके पिता ने थ्येनआनमन स्क्वायर पर आयोजित मिलिट्री परेड में चीनी प्रेसिडेंट शी जिनपिंग और रूसी प्रेसिडेंट व्लादिमीर पुतिन के साथ सेंटर स्टेज शेयर किया था।

लेकिन उससे पहले, 2022 स्टेट मीडिया ने मिसाइल इवेंट में किम और उनकी बेटी की कई तस्वीरें जारी कीं, वह सफेद कोट और लाल जूते में अपने पिता के साथ हाथ में हाथ डालकर चल रही थीं।

यह मिसाइल टेस्ट उन बड़े मिलिट्री इवेंट्स की सीरीज़ में पहला था, जिसमें किम जोंग उन ने अपनी बेटी को दिखाया। उनकी सावधानी से तैयार की गई अपीयरेंस में मिसाइल टेस्ट, एक नेवल डिस्ट्रॉयर का लॉन्च शामिल था। बहरहाल, पेइचिंग की उनकी यात्रा से उनके मेज़बान ने यह अंदाज़ा लगा लिया था कि जू ए भविष्य की वारिस हैं। 'पिता की वारिस' वाली थ्योरी को चीन की उनकी पहली ज्ञात विदेश यात्रा से और बल मिला है।

हालांकि, दक्षिण कोरियाई ख़ुफ़िया एजेंसी 'एनआईएस' ने कहा, कि नॉर्थ कोरिया की सत्ता में उत्तराधिकार की प्रक्रिया को लेकर अभी भी कई संभावनाएं हैं, क्योंकि 41 साल के किम जोंग उन अभी भी जवान हैं, उन्हें कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं है, और उनके दूसरे बच्चे भी हैं। इसके बर'अक्स, कुछ साउथ कोरियाई अधिकारियों और विशेषज्ञों ने शुरू में जू ए को भविष्य का वारिस मानने पर शक जताया था, उन्होंने उत्तर कोरिया के पुरुषों द्वारा सत्ता संरचना और कन्फ्यूशियस के प्रभाव का हवाला दिया था।

1948 में अपनी स्थापना के बाद से, नॉर्थ कोरिया पर लगातार किम परिवार के पुरुष सदस्यों का शासन रहा है। किम जोंग इल ने 1994 में अपने पिता और उत्तर कोरिया के संस्थापक किम इल सुंग की मौत के बाद सत्ता संभाली थी। किम जोंग उन को 2011 के आखिर में अपने पिता किम जोंग इल की मौत के बाद सत्ता विरासत में मिली थी।

एनआईएस का मानना है कि पब्लिक इवेंट्स में उन्होंने जो रोल निभाया है, उससे पता चलता है कि वह 'पॉलिसी इनपुट' लेने लगी है। और उन्हें असल में दूसरी सबसे बड़ी लीडर माना जा रहा है। नॉर्थ कोरिया ने घोषणा की है कि फरवरी, 2026 के आखिर में सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी की नौवीं कांग्रेस आहूत की जाएगी, जिसमें आर्थिक, विदेशनीति और सुरक्षा पर व्यापक चर्चा की जाएगी। शायद, इसमें किम जू ए की भूमिका पर भी कोई संकेत मिले।

'जू ए' नाम का ज़िक्र सबसे पहले अमेरिकन बास्केटबॉल प्लेयर डेनिस रॉडमैन ने 2013 में नॉर्थ कोरिया के अपने दौरे के बाद किया था। फरवरी, 2026 के पहले हफ्ते दक्षिण कोरियाई ख़ुफ़िया एजेंसी एनआईएस ने कहा कि किम जू ए ने वारिस ट्रेनिंग पूरी कर ली है, मिलिट्री इवेंट्स में उनकी मौजूदगी, पॉलिसी से जुड़े फैसलों में उनकी बढ़ती भागीदारी और कुमसुसन पैलेस ऑफ़ द सन के दौरे के विजुअल्स उन कयासों को पुख्ता कर रहे हैं, कि किम की यही राइट च्वाइस बेबी बनेगी।

किम जोंग-उन की बहन, यो-जोंग, सत्ता संभालने की दावेदार बनकर धूमकेतु की तरह उभरीं, फिर विलुप्त हो गईं। यह किम परिवार में सत्ता संघर्ष की ओर इशारा करता था। कोरियाई मामलों के विशेषज्ञों के अलग-अलग ख्याल थे, पहला, अगर किम यो-जोंग सत्ता में आती हैं, तो उनकी भाभी, री सोल-जू, बहुत घबरा जाएंगी। दूसरा, 'भले ही री सोल-जू अपनी भाभी जितनी पावरफुल न हों, लेकिन नॉर्थ कोरिया की फर्स्ट लेडी होने के नाते उनका दबदबा तो दिखता है।' एक तीसरी थ्योरी यह भी है, कि किम जोंग-उन और री सोल-जू का एक बेटा हो सकता है, लेकिन उनका बेटा राज-काज संभालने के लिए बहुत छोटा है।

सियोल में आसन इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिसी स्टडीज़ के सीनियर फेलो गो म्योंग-ह्यून भी यही तर्क देते हैं कि किम जू ए का पब्लिक में दिखना एक राजकुमारी जैसा है। किम परिवार के शासन को 'यूरोपियन स्टाइल की राजशाही की झलक' दिखाने की कवायद है। 2020 से 2022 तक ख़ुफ़िया एजेंसी 'एनआईएस' के डायरेक्टर रह चुके पार्क जी-वोन ने तर्क दिया, कि नॉर्थ कोरिया की सरकार ऐतिहासिक रूप से पुरुष-प्रधान रही है, जिससे किम जू ए का सत्ता में आना मुश्किल है। यदि यह संभव होता भी है, फिर भी कोई नहीं जानता, कि यो-जोंग अपनी भतीजी को उत्तर कोरिया की सर्वोच्च कुर्सी पर विराजे हुए देखना कितना बर्दाश्त कर पाएंगी।

प्रेरणा

मन का संतुलन ही असली तपः विश्राम में छिपी शक्ति का रहस्य

भारतीय चिंतन परंपरा में मन को समस्त कर्मों का मूल माना गया है। मन जैसा सोचता है, वैसा ही जीवन का स्वरूप बनता जाता है। यदि मन शांत, संयमित और संतुलित हो तो कठिन परिस्थितियाँ भी साधारण लगने लगती हैं, और यदि मन अशांत हो तो साधारण कार्य भी भारी प्रतीत होते हैं। इसी सत्य को अत्यंत सरल और गहन ढंग से एक कथा के माध्यम से समझाया गया है, जिसमें एक महर्षि अपने आचरण से यह सिद्ध करते हैं कि मन को निरंतर तानकर रखना बुद्धिमानी नहीं, बल्कि समय-समय पर उसे विश्राम देना ही उसकी असली शक्ति को बनाए रखता है।

एक तपस्वी महात्मा थे जो अत्यंत विद्वान, अनुशासित और साधना में लीन रहने वाले थे। वे अपने दैनिक कार्यक्रम में अध्ययन, जप, ध्यान और यज्ञ आदि का पालन करते थे। उनके आश्रम का वातावरण शांत और पवित्र था। किंतु उनकी एक विशेष आदत थी जो देखने वालों को कभी-कभी आश्चर्य में डाल देती थी। वे अपने कठोर साधना क्रम के बाद कुछ समय पशु-पक्षियों के साथ बिताते थे। वे उन्हें दाना खिलाते, उनके साथ बैठते और कभी-कभी बच्चों की भाँति उनसे खेलते भी थे। पक्षी उनसे इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि उनके इशारे पर उनके कंधों पर आ बैठते और निडर होकर उनके हाथों से दाना चुगते।

एक दिन एक अन्य विद्वान संत उनके आश्रम में आए। उन्होंने जब यह दृश्य देखा तो उनके मन में प्रश्न उठा। उन्होंने सोचा कि इतना महान तपस्वी यदि अपना समय इस प्रकार बिताएगा तो क्या यह उसकी साधना में बाधा नहीं बनेगा? उन्होंने विनम्रता से पूछा, "गुरुदेव, आप इतने बड़े ज्ञानी होकर इस प्रकार चिड़ियों के साथ समय क्यों व्यतीत करते हैं? क्या इससे आपका मूल्यवान समय व्यर्थ नहीं जाता?"

महात्मा ने मुस्कराकर कोई सीधा उत्तर नहीं दिया। उन्होंने पास रखा धनुष उठाया और उसकी डोरी ढीली कर दी। अतिथि संत ने आश्चर्य से पूछा, "आपने धनुष की डोरी क्यों ढीली कर दी? क्या इससे उसका उपयोग बाधित नहीं होगा?" तब महात्मा ने शांत स्वर में कहा, "यदि धनुष की डोरी हर समय तनी रहे तो वह शीघ्र ही कमजोर होकर टूट जाएगी। किंतु यदि उसे केवल आवश्यकता पड़ने पर ताना जाए और शेष समय ढीला रखा जाए, तो वह अधिक समय तक मजबूत बनी रहती है। मन भी ऐसा ही है। यदि हम उसे हर समय तनाव में रखेंगे, तो वह थककर टूट जाएगा। किंतु यदि कार्य के बाद उसे विश्राम देंगे, तो वह और अधिक समर्थ बन जाएगा।" यह उत्तर केवल एक उदाहरण नहीं था, बल्कि जीवन का एक गहरा सिद्धांत था। आज के समय में मनुष्य निरंतर दौड़ में लगा हुआ है। उसे लगता है कि हर क्षण उत्पादक रहना आवश्यक है। यदि वह थोड़ी देर भी विश्राम करे तो वह पीछे रह जाएगा। यही सोच धीरे-धीरे मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद को जन्म देती है। मन पर निरंतर दबाव डालने से उसकी कार्यक्षमता घटने लगती है। जैसे कोई मशीन बिना रुके चलती रहे तो वह गरम होकर खराब हो जाती है, वैसे ही मन भी निरंतर तनाव में रहने से असंतुलित हो जाता है।

मन की शक्ति का अर्थ केवल कठोर अनुशासन या लगातार परिश्रम नहीं है। सच्ची शक्ति संतुलन में निहित है। जब हम कार्य करते हैं तो पूरे मन से करें, किंतु जब विश्राम करें तो पूर्ण रूप से विश्राम करें। आधा-अधूरा विश्राम मन को राहत नहीं देता। प्रकृति के साथ समय बिताना, संगीत सुनना, परिवार के साथ हँसना-बोलना या कुछ क्षण मौन में बैठना—ये सब मन को पुनः ऊर्जावान बनाते हैं।

अक्सर लोग यह भूल जाते हैं कि आनंद और सरलता भी साधना का हिस्सा हैं। कठोरता ही आध्यात्मिकता नहीं है। एक संत का हृदय कोमल होता है, वह प्रकृति से जुड़ा होता है। जब वह पक्षियों के साथ खेलता है, तो वह केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि अपने भीतर की सहजता को बनाए रखता है। यही सहजता उसकी साधना को भी गहराई प्रदान करती है।

मानसिक संतुलन का सीधा संबंध हमारी सफलता से है। यदि मन स्थिर और प्रसन्न है तो निर्णय स्पष्ट होते हैं, विचार रचनात्मक होते हैं और समस्याओं का समाधान सहज मिलता है। किंतु यदि मन थका हुआ है तो छोटी-सी चुनौती भी पहाड़ जैसी लगने लगती है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने मन को समझें और उसकी आवश्यकताओं का सम्मान करें। आज के आधुनिक जीवन में यह शिक्षा और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। डिजिटल युग में मन लगातार सूचनाओं से घिरा रहता है। मोबाइल, समाचार, सोशल मीडिया—इन सबने मन को निरंतर सक्रिय बना दिया है। उसे शांति का अवसर ही नहीं मिलता। ऐसे में यदि हम स्वयं समय निकालकर कुछ क्षण प्रकृति, मौन या आत्मचिंतन में बिताएँ, तो मन की थकान दूर हो सकती है।

मन की शक्ति असीम है, परंतु उसकी सीमाएँ भी हैं। उसे अनदेखा करना बुद्धिमानी नहीं है। यदि हम उसे समय-समय पर विश्राम देंगे, तो वह अधिक सशक्त होकर हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक बनेगा। संतुलित मन ही सच्चा मित्र है। वही हमें सही दिशा में आगे बढ़ाता है।

इस कथा का सार यही है कि निरंतर तनाव में जीना श्रेष्ठता का प्रतीक नहीं है। श्रेष्ठता संतुलन में है। जैसे धनुष की डोरी को समय पर ढीला करना उसकी आयु बढ़ा देता है, वैसे ही मन को समय-समय पर हल्का करना जीवन को दीर्घ और सुखमय बनाता है। जब हम यह रहस्य समझ लेते हैं, तब हमें ज्ञात होता है कि सफलता केवल कठोर परिश्रम से नहीं, बल्कि संतुलित जीवन से प्राप्त होती है।

अंततः मन की सच्ची शक्ति उसकी लचक में है। जो मन परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सकता है, जो कार्य के समय पूर्ण एकाग्र हो और विश्राम के समय पूर्ण शांत—वही मन जीवन को सार्थक बनाता है। यही शिक्षा हमें इस प्रेरक प्रसंग से मिलती है कि मन को साधना है, पर उसे थकाना नहीं; उसे अनुशासित रखना है, पर कठोरता से नहीं; उसे सक्रिय रखना है, पर विश्राम से वंचित नहीं करना है। यही संतुलन जीवन की वास्तविक सफलता का आधार है।

बांग्लादेश में बीएनपी की भारी जीत से भारत के लिए सियासी निहितार्थ

बांग्लादेश में प्रमुख विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने फरवरी 2026 के संसदीय चुनावों में भारी जीत हासिल की है। उसने 300 सीटों में से 151 से 209 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया है। इससे बांग्लादेश में बीएनपी की भारी जीत से भारत के लिए सियासी निहितार्थ स्पष्ट हैं, क्योंकि यह अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग के पतन के बाद पहला बड़ा चुनाव है, जो 2024 के छात्र-आंदोलन से उभरा था। चूंकि बीएनपी पहले से सत्ता में रहती आई है, इसलिए उसकी जीत के वैश्विक मायने भी हैं। वह यह कि पार्टी कमोबेश पूर्व प्रधानमंत्री स्व.बेगम खालिदा जिया के अधूरे सपनों को ही साकार करेगी। वो भी तब जब उनके पुत्र तारिक रहमान देश के नए प्रधानमंत्री बनेंगे। देखा जाए तो बीएनपी ने जमात-ए-इस्लामी को काफी पीछे छोड़ते हुए प्रचंड जीत दर्ज की है, जहां जमात को महज 42-68 सीटें ही मिलीं हैं। इसप्रकार तारिक रहमान, जो कि बीएनपी के प्रमुख नेता हैं, देश के संभावित प्रधानमंत्री बन सकते हैं। बीएनपी की जीत की वजह यह है कि पार्टी ने गरीबी उन्मूलन, भ्रष्टाचार विरोध और विदेशी निवेश पर जोर दिया है। इससे भारत के लिए सियासी मायने भी साफ हैं। भले ही भारत-बीएनपी संबंध ऐतिहासिक रूप से तनावपूर्ण रहे हैं, खासकर पाकिस्तान और जमात से बीएनपी के पुराने गठजोड़ के कारण। इसलिए उनकी जीत से भारत को सीमा सुरक्षा, पूर्वोत्तर क्षेत्र में अस्थिरता और चरमपंथी समूहों की चिंता बढ़ सकती है, हालांकि बीएनपी समानता-आधारित संबंधों का वादा कर रही है। खासकर हसीना युग के बाद विदेश नीति में बदलाव से व्यापार, जल बंटवारा और कनेक्टिविटी पर असर पड़ सकता है।

वहीं बीएनपी की जीत से दुनिया के लिए भी सियासी मायने साफ हैं। बीएनपी की जीत बांग्लादेश में राजनीतिक स्थिरता ला सकती है, लेकिन विदेश नीति में संतुलन अपनाने से चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध मजबूत हो सकते हैं। वहीं दक्षिण एशिया में भू-राजनीतिक बदलाव संभव है, जहां भारत के प्रभाव में कमी और चीन के निवेश ($2.1 बिलियन) बढ़ सकता है। वैश्विक रूप से, यह क्षेत्रीय गठबंधनों को प्रभावित कर सकता है, खासकर म्यांमार शरणार्थी और आर्थिक सुधारों के संदर्भ में।

यह ठीक है कि भारत और बीएनपी के बीच संबंध सुधारने के प्रयास चुनाव से पहले ही शुरू हो चुके हैं, जिसमें एस जयशंकर की तारिक रहमान से "बहुत मैत्रीपूर्ण" चर्चा शामिल है। हालांकि हसीना के भारत में रहने से तनाव बरकरार है, फिर भी दोनों पक्ष सहयोग बढ़ाने को इच्छुक दिख रहे हैं। इसलिए संभावित सुधार के कदम उठाये जा सकते हैं। खासकर राजनयिक संपर्क बढ़ाना, क्योंकि भारत ने बीएनपी नेताओं से मुलाकातें कीं, जैसे प्रणय वर्मा की मीरजा फखरुल से, जहां बीएनपी ने भारत की सुरक्षा हितों का सम्मान करने का आश्वासन दिया।

वहीं, व्यापार और वीजा बहाली के दृष्टिगत यात्रा, व्यापार और वीजा प्रतिबंध हटाने पर फोकस किया जा सकता है, जो हसीना के बाद बाधित हो गए थे। खासकर जल बंटवारा और सीमा मुद्दे हल करना यानी बीएनपी पानी बंटवारे और सीमा हत्याओं (जैसे फेलानी घटना) पर जोर दे रही है। इसलिए कुछ चुनौतियां भी आएंगी, क्योंकि बीएनपी हसीना की प्रत्यर्पण की मांग कर रही है, जिसे भारत शरण दे रहा है, इससे जन-भावना भी प्रभावित हो रही है।

वहीं, जमात-ए-इस्लामी का प्रभाव और पाक-चीन झुकाव भारत की चिंता बढ़ा सकता है। फिर भी भविष्य की संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। चूंकि बीएनपी "समानता-आधारित" पड़ोसी संबंधों का वादा कर रही है, जबकि भारत अल्पसंख्यक सुरक्षा और चरमपंथ विरोध की शर्त रख रहा है। इसलिए विशेषज्ञों के अनुसार, व्यावहारिक आवश्यकताएं रीसेट सुनिश्चित करेंगी, लेकिन ऐतिहासिक अविश्वास दूर करने में समय लगेगा।

यद्यपि तारिक रहमान, जो बीएनपी के प्रमुख नेता हैं, और भारत के प्रति संयमित और तटस्थ रुख अपनाते दिख रहे हैं, जो अतीत के तनावपूर्ण रिश्तों से अलग है। वे समानता-आधारित पड़ोसी संबंधों पर जोर देते हैं, लेकिन शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग रखते हैं। उनका मुख्य स्टैंडपॉइंट्स यह है कि अल्पसंख्यक सुरक्षा और स्थिरता के नजरिए से वो अपने भाषणों में अहिंसा, कानून के राज और हिंदू अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का वादा किया, जो भारत की चिंताओं को संबोधित करता है।

वहीं, समानता का जोर के मद्देनजर "बराबरी के रिश्ते" चाहते हैं, इसलिए उन्होंने पुरानी असमानताओं (जैसे जल बंटवारा, सीमा हत्याएं) पर बात उठाई, लेकिन टकराव से बचते हैं। हाँ, भारत में शरण लेने वाली हसीना को वापस लाने की मांग, जो सबसे बड़ा विवादास्पद मुद्दा है। हालांकि हालिया संकेत यही है कि ढाका लौटने के बाद उनके संयमित भाषण को खुफिया एजेंसियां "इंडिया-न्यूट्रल" मान रही हैं, जो 2001-06 के भारत-विरोधी दौर से अलग है। लिहाजा भारत के साथ सहयोग संभव, लेकिन पाकिस्तान-चीन झुकाव और जमात प्रभाव चिंता का विषय है। इसलिए विशेषज्ञों का मानना है कि व्यावहारिकता से रिश्ते सुधर सकते हैं।

देखा जाए तो तारिक रहमान के हालिया भाषणों में भारत का सीधा जिक्र बहुत कम या न के बराबर आया है, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक संकेत दिए गए हैं। वहीं उनके भाषणों की मुख्य शैली में भारत का प्रत्यक्ष उल्लेख न करना समाहित है। खासकर ढाका लौटने (25 दिसंबर 2025) के 17 मिनट के पहले भाषण में भारत का नाम नहीं लिया, लेकिन अल्पसंख्यक सुरक्षा (हिंदू, बौद्ध आदि), अहिंसा और कानून के राज पर जोर दिया—जो भारत की प्रमुख चिंताओं को संबोधित करता है। वहीं, "बांग्लादेश फर्स्ट" नारा यानी "ना दिल्ली, ना रावलपिंडी, सबसे पहले बांग्लादेश" कहकर तटस्थ विदेश नीति का संकेत दिया, जो पुराने भारत-विरोधी रुख से अलग है।

अभियान

महाशिवरात्रि: आत्मजागरण, शिवत्व और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का उत्सव

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में Maha Shivaratri एक ऐसा महापर्व है जो केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के गहरे दार्शनिक, आध्यात्मिक और सामाजिक आयामों को स्पर्श करता है। यह वह रात्रि है जिसे शिव साधना की महारात्रि कहा गया है—एक ऐसी रात जब मनुष्य अपने भीतर के अंधकार से साक्षात्कार कर उसे प्रकाश में रूपांतरित करने का प्रयास करता है। हिंदू मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान शिव की आराधना से साधक शिव तत्व से जुड़ सकता है, आत्मशुद्धि प्राप्त कर सकता है और चेतना की उच्च अवस्था की अनुभूति कर सकता है। यही कारण है कि शिव भक्तों के लिए यह पर्व अत्यंत श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है। शिव का स्वरूप जितना रहस्यमय है, उतना ही व्यापक भी। वे संहारक कहे जाते हैं, किंतु उनका संहार विनाश का नहीं, बल्कि रूपांतरण का प्रतीक है। वे उस शक्ति के प्रतीक हैं जो असत्य, अहंकार और अज्ञान का अंत कर सत्य, संतुलन और नवजीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। महाशिवरात्रि इसी परिवर्तनकारी चेतना का उत्सव है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में विषमताएं, दुख और संघर्ष अवश्य आते हैं, परंतु उन्हें धैर्य, साधना और आत्मबल से रूपांतरित किया जा सकता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के समय जब हलाहल विष निकला और समस्त सृष्टि संकट में पड़ गई, तब भगवान शिव ने उस विष को अपने कंठ में धारण कर लिया। यह प्रसंग केवल एक धार्मिक कथा नहीं, बल्कि त्याग और उत्तरदायित्व का गहन प्रतीक है। शिव का नीलकंठ स्वरूप यह संदेश देता है कि समाज और संसार की रक्षा के लिए कभी-कभी विषमताओं को सहना पड़ता है। इसी प्रकार यह भी माना जाता है कि इसी रात्रि को शिवलिंग के रूप में अनंत ब्रह्मांडीय चेतना का प्राकट्य हुआ था। शिवलिंग आकार और निराकार के मध्य का प्रतीक है—वह ऊर्जा जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है। कई परंपराओं में महाशिवरात्रि को शिव और माता पार्वती के विवाह की रात्रि भी माना जाता है, जो चेतना और शक्ति के मिलन का प्रतीक है।

इस पर्व की विशेषता यह है कि यह बाहरी आडंबर से अधिक आंतरिक साधना पर बल देता है। महाशिवरात्रि की रात को जागरण का विशेष महत्व है। रात्रि को आध्यात्मिक साधना के लिए अनुकूल माना गया है, क्योंकि यह शांति, मौन और एकाग्रता का समय है। भक्त पूरी रात 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करते हैं और ध्यान में लीन रहते हैं। चार प्रहरों में शिव पूजा की परंपरा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहले प्रहर में जलाभिषेक, दूसरे में दूध से, तीसरे में घी से और चौथे में शहद, पंचामृत तथा बेलपत्र से अभिषेक किया जाता है। प्रत्येक अभिषेक का अपना प्रतीकात्मक अर्थ है—जल पवित्रता का, दूध निष्कलुषता का, घी तेज का और शहद मधुरता का प्रतीक है। इन अनुष्ठानों के माध्यम से साधक अपने भीतर भी शुद्धता, ऊर्जा और संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। भारत की सांस्कृतिक विविधता में यह पर्व एकता का सूत्र भी है। गांवों में लोकगीत, भजन-कीर्तन और सामूहिक आराधना का आयोजन होता है, जबकि शहरों में मंदिरों को सजाया जाता है और भव्य धार्मिक कार्यक्रम होते हैं। Varanasi, Ujjain, Haridwar और Somnath Temple जैसे प्रमुख तीर्थस्थलों पर लाखों श्रद्धालु एकत्र होकर भगवान शिव की आराधना करते हैं। इन स्थलों पर पूरी रात आरती, मंत्रोच्चार और दर्शन का वातावरण बना रहता है। यह दृश्य केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक निरंतरता और सामूहिक आस्था का प्रमाण है।

महाशिवरात्रि का व्रत आत्मसंयम और तपस्या का प्रतीक है। इस दिन प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण किए जाते हैं और दिनभर उपवास रखा जाता है। कुछ लोग फलाहार करते हैं तो कुछ निर्जला व्रत रखते हैं। व्रत का वास्तविक उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि मन और इंद्रियों को अनुशासित करना है। इस दिन क्रोध, असत्य, निंदा और नकारात्मक विचारों से दूर रहने का प्रयास किया जाता है। ध्यान, जप और मौन के माध्यम से मन को स्थिर किया जाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ और तनाव के बीच यह साधना मानसिक संतुलन और आंतरिक शांति प्रदान करती है।

शिव का स्वरूप प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी जटाओं से गंगा प्रवाहित होती है, मस्तक पर चंद्रमा विराजमान है, गले में सर्प है और शरीर पर भस्म। यह सब प्रकृति के तत्वों के साथ उनके अभिन्न संबंध को दर्शाता है। उनकी पूजा में बेलपत्र, धतूरा, आक जैसे प्राकृतिक तत्वों का प्रयोग किया जाता है। यह हमें याद दिलाता है कि मानव और प्रकृति का संबंध परस्पर निर्भरता का है। आज जब पर्यावरण संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं गंभीर रूप ले चुकी हैं, तब शिव का यह संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है।

कई स्थानों पर महाशिवरात्रि के अवसर पर वृक्षारोपण, नदी स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह समझ विकसित हो रही है कि शिव की सच्ची आराधना केवल मंदिरों में दीप जलाने से नहीं, बल्कि प्रकृति की रक्षा करने से भी होती है। यदि हम जल, जंगल और जमीन की रक्षा करें, तो वही शिव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। शिव का तपस्वी स्वरूप हमें सादगी, संतुलन और सीमित इच्छाओं का पाठ पढ़ाता है। वे भौतिक वैभव से दूर, कैलाश की निस्संगता में निवास करते हैं। यह हमें उपभोक्तावादी जीवनशैली से हटकर संतुलित और संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

महाशिवरात्रि आत्मविश्वास और आत्मबोध का भी पर्व है। यह हमें सिखाती है कि बाहरी उपलब्धियां तभी सार्थक हैं जब भीतर शांति और संतुलन हो। भौतिक सफलता के साथ आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। यह पर्व हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और उसे सकारात्मक दिशा देने की प्रेरणा देता है। जीवन में अंधकार, निराशा या संकट चाहे जितना भी गहरा क्यों न हो, यदि हम अपने भीतर की चेतना का दीप प्रज्वलित कर लें, तो मार्ग अवश्य मिल जाता है।

अंततः महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक तिथि नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला का उत्सव है। यह हमें सिखाती है कि त्याग, संतुलन, करुणा, साहस और आत्मसंयम ही सच्चे शिवत्व के गुण हैं। जब हम अपने भीतर इन गुणों को विकसित करते हैं, तभी महाशिवरात्रि का वास्तविक अर्थ पूर्ण होता है। धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय चेतना का यह संगम इस पर्व को हिंदू समाज ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और प्रेरणादायी बनाता है। शिवत्व का अर्थ है भीतर के प्रकाश को पहचानना और उसी के सहारे जीवन के अंधकार को दूर करना—और यही इस महापर्व का शाश्वत संदेश है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में भव्य रूप से मनाया गया ‘शताब्दी शिक्षा महोत्सव’

शताब्दी शिक्षा महोत्सव केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि गुजरात की संस्कारिता एवं बौद्धिक विकास का जीवंत प्रमाण : शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- शिक्षा से राष्ट्र निर्माण के मंत्र को नगर प्राथमिक शिक्षा समिति के विद्यालय मूल्यनिष्ठ शिक्षा के माध्यम से साकार कर रहे हैं
- 56 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने निजी स्कूल छोड़कर स्कूल बोर्ड की स्मार्ट शालाओं में प्रवेश प्राप्त किया

- **मुख्यमंत्री के करकमलों से अहमदाबाद महानगर पालिका के नए स्कूल बोर्ड भवन तथा 15 स्मार्ट अनुपम शालाओं का लोकार्पण**
- **शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्रेष्ठ शताब्दी अनुपम शालाओं तथा श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया गया**

जीएनएस)। गांधीनगर : अहमदाबाद महानगर पालिका (मनपा-एएमसी) संचालित नगर प्राथमिक शिक्षा समिति द्वारा शुक्रवार को आयोजित ‘शताब्दी शिक्षा महोत्सव’ अंतर्गत नवनिर्मित स्कूल बोर्ड भवन तथा स्मार्ट शालाओं के लोकार्पण तथा श्रेष्ठ शालाओं एवं शिक्षकों को पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम शुक्रवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

स्कूल बोर्ड के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित इस ‘शताब्दी शिक्षा महोत्सव’ में शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा तथा शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रीवाबा जाडेजा भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के आरंभ में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने नवरंगपुरा में 10.61 करोड़ रुपए की लागत से नवनिर्मित ‘स्कूल बोर्ड भवन’ का लोकार्पण किया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने भवन की मुलाकात के दौरान ‘स्पार्क प्रोजेक्ट’ अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा तैयार की गई कृतियाँ निहारीं। उन्होंने बच्चों की विभिन्न कला प्रस्तुतियों की प्रशंसा की तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के साथ सीधा संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया।

साबरमती रिवरफ्रंट पर आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के करकमलों से 16.11 करोड़ रुपए की लागत से तैयार हुई 15 स्मार्ट अनुपम शालाओं का ई-लोकार्पण किया गया। शिक्षा समिति के शताब्दी वर्ष महोत्सव के हिस्से के रूप में सम्मानित किए जाने वाले 100 श्रेष्ठ विद्यालयों एवं 100 श्रेष्ठ शिक्षकों में सांकेतिक रूप से 6 श्रेष्ठ शताब्दी अनुपम शालाओं को चेक व अवॉर्ड तथा 6 श्रेष्ठ शिक्षकों को चेक, शिल्ड एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

‘शिक्षा शताब्दी महोत्सव’ में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि अखंड भारत के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल ने 100 वर्ष पहले जिन नैतिक मूल्यों एवं आत्मनिर्भरता की नींव पर नगर प्राथमिक शिक्षा समिति की स्थापना की थी, वह आज 453 शालाओं के साथ वटवृक्ष बनी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा से राष्ट्र निर्माण के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मंत्र को नगर प्राथमिक शिक्षा समिति के विद्यालय मूल्यनिष्ठ शिक्षा के माध्यम से साकार कर रहे हैं।

अहमदाबाद स्कूल बोर्ड के साथ उपाध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के संस्मरणों को ताजा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे समर्पित शिक्षक ज्ञान परोसने के साथ-साथ विद्यार्थियों के घर तक पहुँच कर उनका व्यक्तिगत रूप से ध्यान रख रहे हैं, जो वास्तव में प्रशंसनीय हैं। शिक्षकों की इसी निष्ठा का परिणाम है कि आज सरकारी स्कूलों को लेकर पुरानी मान्यताएँ बदल गई हैं और 56 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने निजी स्कूल छोड़कर स्कूल बोर्ड की स्मार्ट शालाओं में प्रवेश प्राप्त किया है। उन्होंने जोड़ा कि राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू कराए गए शाला प्रवेशोत्सव तथा कन्या केळवणी कार्यक्रम द्वारा राज्य में कन्या शिक्षा की दर बढ़ी है तथा ड्रॉपआउट रेट शून्य के निकट ले जाने में हमें सफलता मिली है।

मुख्यमंत्री ने कन्याओ को उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता के रूप में प्रोत्साहन प्रदान करने वाली नमो लक्ष्मी योजना तथा विज्ञान संकाय की शिक्षा को प्रोत्साह देने के लिए शुरू की गई नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना सहित महत्वपूर्ण योजनाओं और राज्य में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तेज व उचित क्रियान्वयन का भी इस अवसर पर उल्लेख किया।

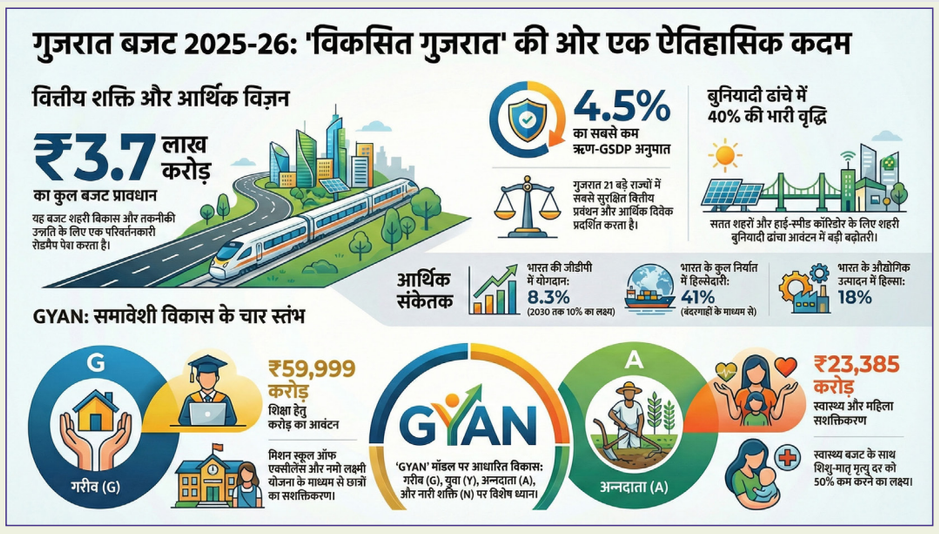

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजनरी नेतृत्व में डबल इंजन सरकार शिक्षा एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर पर विशेष बल दे रही है। केन्द्रीय बजट में शिक्षा मंत्रालय के लिए पहले की तुलना में 8.27 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1.39 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान और अटल टिंकरिंग लैब्स के लिए 3200 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है, जिससे बच्चे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यावहारिक अनुभवों को प्राप्त कर सकें।

उन्होंने कहा कि अब समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और फ्यूचरिस्टिक शिक्षा का है। प्रधानमंत्री ने इस समय को एस्पिरेशनल इंडिया के रूप में बताया है और इसके लिए बजट में भी अनुरूप प्रावधान किए हैं। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के लिए हमें ज्ञान, संस्कार तथा टेक्नोलॉजी के समन्वय के साथ आगे बढ़ना है।

‘शताब्दी शिक्षा महोत्सव’ कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा ने प्रासंगिक संबोधन में कहा कि शताब्दी शिक्षा महोत्सव केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि गुजरात की संस्कारिता तथा बौद्धिक विकास का जीवंत प्रमाण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुदूरवर्ती बच्चे को श्रेष्ठ शिक्षा देने के सपने को साकार करने के लिए आज स्कूल स्मार्ट क्लासरूम से सज्ज बने हैं। जब बच्चा डिजिटल स्क्रीन पर भौगोलिक घटनाएँ एवं वैज्ञानिक प्रयोग देखता है, तब उसका आत्मविश्वास सच्ची सफलता में परिणामित होता है। उन्होंने अनेक अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त नए स्कूल बोर्ड भवन को प्रशासनिक कार्यक्षमता बढ़ाने वाला बताया।

नई शिक्षा नीति (एनईपी-2020) तथा ‘मिशन स्कूल ऑफ एक्सीलेंस’ अंतर्गत हो रहे क्रांतिकारी परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए शिक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार केवल भवनों का निर्माण नहीं कर रही है, बल्कि आने वाले कल के भारत के भाग्य विधाताओं का निर्माण कर रही है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल नौकरी प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि एक पवित्र साधना है। उन्होंने जोड़ा कि समर्पित शिक्षक ही बच्चे के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित कर सकते हैं। उन्होंने नगर प्राथमिक शिक्षा समिति की अनुपम शालाओं को समग्र राज्य के लिए प्रेरणादायी बताया और इस शिक्षा यज्ञ में अभिभावकों तथा दानवीरों की भागीदारी की प्रशंसा की। डॉ. वाजा ने बजट सत्र की व्यस्तता के बीच भी शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए कार्यक्रम में समय देने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर यू. एन. मेहता फाउंडेशन तथा अहमदाबाद महानगर पालिका एवं गांधीनगर महानगर पालिका के बीच सरखेज-गांधीनगर राजमार्ग (एसजी हाईवे) के सौंदर्यीकरण के संदर्भ में समझौता दस्तावेज का आदान-प्रदान हुआ।

आरंभ में अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन ने स्वागत संबोधन करते हुए कहा कि लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा स्थापित नगर प्राथमिक शिक्षा समिति के शताब्दी वर्ष का महोत्सव गौरव का क्षण है। उन्होंने गरीब एवं मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों को निजी स्कूलों जैसी आधुनिक व स्मार्ट शिक्षा देने की मुख्यमंत्री की मंशा की प्रशंसा करते हुए जोड़ा कि आज सरकारी स्कूल इतने स्मार्ट बने हैं कि उनमें प्रवेश के लिए अभिभावकों को वेटिंग में रहना पड़ता है।

नवरंगपुरा में लगभग 10.61 करोड़ रुपए की लागत से नवनिर्मित स्कूल बोर्ड भवन की विशेषता यह है कि अब शिक्षा समिति के सभी 18 विभाग एक ही भवन में कार्यरत होंगे, जिससे प्रशासनिक प्रक्रिया तेज व सरल बनेगी। पिछले दो वर्ष से पालडी में कार्यरत कार्यालय के अब आधुनिक सुविधाओं से युक्त चार तलीय नए भवन में कार्यरत होने से पेंशनभोगियों और अभिभावकों को प्रशासनिक कार्यों में बड़ी राहत मिलेगी।

कार्यक्रम के अंत में म्युनिसिपल स्कूल बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सुजय मेहता ने आभार ज्ञापन किया।

‘शताब्दी शिक्षा महोत्सव’ कार्यक्रम में शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, अग्रणी श्री प्रेरकभाई शाह, अहमदाबाद के उप महापौर श्री जतिन पटेल, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांग दाणी, पदाधिकारी, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, शासनाधिकारी श्री एल. डी. देसाई, मनपा पदाधिकारी, स्कूल बोर्ड की शालाओं के आचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

श्री ऋत्विक शर्मा ने भावनगर मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक का कार्यभार संभाला

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर 11 फरवरी, 2026 को श्री ऋत्विक शर्मा ने अपर मंडल रेल प्रबंधक का कार्यभार ग्रहण किया।

श्री ऋत्विक शर्मा भारतीय रेल यांत्रिक इंजीनियरिंग सेवा (IRSME) के 2008 बैच के वरिष्ठ अधिकारी हैं। उन्होंने स्पेशल क्लास रेलवे अपरेंटिस (एस.सी.आर.ए.), जमालपुर से यांत्रिक इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व श्री शर्मा अजमेर कारखाना में उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (कैरिज) के पद पर कार्यरत थे। उनके कार्यकाल के दौरान अजमेर कारखाना को बेस्ट वर्कशॉप शील्ड से सम्मानित किया गया। इससे पहले, दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर मंडल में वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने फ्रेट लोडिंग बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया, जिसके फलस्वरूप चक्रधरपुर मंडल को मैकेनिकल इंजीनियरिंग शील्ड प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त, श्री ऋत्विक शर्मा दक्षिण पूर्व रेलवे में डी.जी.एम.(जी) सहित विभिन्न मंडलों में यांत्रिक इंजीनियरिंग विभाग के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं।

नीति आयोगः ‘ट्रेड वॉच क्वार्टरली’ का छठा संस्करण जारी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। NITI Aayog के उपाध्यक्ष Suman Bery ने वित्त वर्ष 2025-26 की जुलाई–सितंबर तिमाही के लिए ‘ट्रेड वॉच क्वार्टरली’ का छठा संस्करण जारी किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार 4.6 लाख करोड़ डॉलर का है, लेकिन भारत की हिस्सेदारी केवल एक प्रतिशत है। रिपोर्ट में चीन, हांगकांग और ताइवान के प्रभुत्व के कारण उच्च-प्रौद्योगिकी घटकों के उत्पादन में भारत की पिछड़ी स्थिति पर ध्यान दिलाया गया है। सुझाव दिया गया है कि भारत को असेंबली आधारित उत्पादन से आगे बढ़कर कलपुर्जा-आधारित विनिर्माण और घरेलू मूल्य संवर्धन, शोध एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर जोर देना चाहिए।

भारत, नेपाल, श्रीलंका और मालदीव में जिम्बाब्वे की राजदूत और उद्योग एवं वाणिज्य उप मंत्री ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से की शिष्टाचार भेंट

- **गुजरात के एमएसएमई सेक्टर के कौशल और विशेषज्ञता का लाभ जिम्बाब्वे के लघु और मझौले उद्यम क्षेत्र को मिलेगा**
- **मुख्यमंत्री ने वाइब्रेंट समिट-2027 और वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस में सहभागी होने का आमंत्रण दिया**
- **शिष्टमंडल ने गुजरात के साथ उद्योग-व्यापार और शिक्षा क्षेत्र में संबंधों को मजबूत करने की उत्सुकता दिखाई**

जीएनएस)। गांधीनगर : भारत, नेपाल, श्रीलंका और मालदीव में जिम्बाब्वे की राजदूत सुश्री स्टेला नकोमो और जिम्बाब्वे के उद्योग एवं वाणिज्य उप मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार मोदी सहित एक शिष्टमंडल ने शुक्रवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार मुलाकात की।

यह शिष्टमंडल अहमदाबाद में 11 से 15 फरवरी के दौरान चल रहे सौराष्ट्र व्यापार उद्योग मंडल के 12वें ट्रेड शो में सहभागी होने के लिए गुजरात की यात्रा पर है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ हुई मुलाकात बैठक के दौरान शिष्टमंडल ने इस बात को लेकर फलदायी चर्चा-परामर्श किया कि कैसे जिम्बाब्वे के लघु और मझौले उद्यम (एसएमई) सेक्टर को गुजरात के एसएमई सेक्टर के कौशल और विशेषज्ञता का सहयोग मिल सकता है।

जिम्बाब्वे की राजदूत और उप मंत्री ने इस संदर्भ में कहा कि गुजरात मैन्युफैक्चरिंग हब, ऑटो हब और सेमीकंडक्टर जैसे उभरते क्षेत्र में भी हब बनने के साथ ही सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) सेक्टर में भी अग्रणी है और जिम्बाब्वे इसका लाभ उठाने को उत्सुक है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी गुजरात की एमएसएमई की इस विशेषज्ञता का लाभ जिम्बाब्वे को मिल सके, इसके लिए उनके एसएमई सेक्टर की क्षमता, कौशल विकास तथा प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग के माध्यम से आगे बढ़ने की संभावनाएं तलाशकर मदद करने की तत्परता व्यक्त की।

जिम्बाब्वे के शिष्टमंडल ने उद्योग-व्यापार के अलावा शिक्षा क्षेत्र में भी गुजरात के साथ संबंधों का दायरा बढ़ाने में रुचि दिखाई। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि जिम्बाब्वे के पुलिस और सुरक्षा अधिकारी गांधीनगर स्थित नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी (एनएफएसयू) में सिक्योरिटी और साइबर क्राइम सिक्योरिटी जैसे विभिन्न विषयों के उच्च पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जिम्बाब्वे को आगामी वाइब्रेंट समिट-2027 और वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस की अगली कड़ी में शामिल होने का आमंत्रण दिया।

जिम्बाब्वे की राजदूत और उप मंत्री ने मार्च-2026 में वहां आयोजित होने जा रहे एसएमई एग्जीबिशन के अवलोकन के लिए गुजरात के एमएसएमई सेक्टर के उद्योगकारों और राज्य सरकार के अधिकारियों को आमंत्रण दिया।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इसके परिणामस्वरूप एसएमई और व्यापार जगत के लोगों के साथ बातचीत और उद्योगों का दौरा करने से जिम्बाब्वे के एसएमई सेक्टर को नई टेक्नोलॉजी के अनुरूप विकास के अवसर मिलेंगे।

इस शिष्टाचार मुलाकात बैठक में उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप और मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे मौजूद रहे।

19 फरवरी से पश्चिम रेलवे चलाएगी असारवा और आगरा कंट के बीच स्पेशल ट्रेन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी होली फेस्टिवल सीजन के दौरान यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए असारवा और आगरा कंट के बीच स्पेशल ट्रेन विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा-आगरा कंट-असारवा स्पेशल (18 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 01920 असारवा-आगरा कंट स्पेशल 19 फरवरी से 01 मार्च 2026 तक (मंगलवार और बुधवार को छोडकर) असारवा से प्रतिदिन 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा कंट पहुंचेगी। इस तरह ट्रेन संख्या 01919 आगरा कंट-असारवा स्पेशल 18 फरवरी से 28 फरवरी 2026 तक (सोमवार और मंगलवार को छोडकर) आगरा कंट से प्रतिदिन 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली, चंदेरिया, मांडल गढ़, बूंदी, केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास और फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन सं. 01920 की बुकिंग 14 फरवरी 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे का रविवार, 15 फरवरी, 2026 को राम मंदिर एवं बोरीवली स्टेशनों के बीच जम्बो ब्लॉक

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा रेलपथ, सिगनलिंग प्रणाली तथा ऊपरी उपस्करों के रख-रखाव कार्य हेतु रविवार, 15 फरवरी, 2026 को राम मंदिर एवं बोरीवली स्टेशनों के बीच अप फास्ट तथा 5वीं लाइन पर 10:00 बजे से 14:00 बजे तक चार घंटे का जम्बो ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक अवधि के दौरान सभी अप फास्ट लाइन की ट्रेनें बोरीवली एवं अंधेरी स्टेशनों के बीच अप स्लो/छठी लाइन पर चलाई जाएंगी। इसी प्रकार, पाँचवी लाइन की सभी ट्रेनों को अंधेरी एवं बोरीवली स्टेशनों के बीच डाउन फास्ट लाइन पर चलाया जाएगा।

इस ब्लॉक के कारण कुछ अप एवं डाउन उपनगरीय सेवाएं निरस्त रहेंगी। साथ ही, कुछ अंधेरी एवं बोरीवली उपनगरीय सेवाएं हार्बर लाइन पर गोरेगांव तक चलाई जाएंगी। इस संबंध में विस्तृत जानकारी उपनगरीय खंड के सभी स्टेशनों पर स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध रहेगी। यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में महात्मा गांधी साबरमती आश्रम मेमोरियल ट्रस्ट की गवर्निंग काउंसिल बैठक गांधीनगर में सम्पन्न हुई

- **काउंसिल के वाइस चेयरमैन एवं उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन और प्रेरणा से हो रहे साबरमती आश्रम के आधुनिकीकरण और नवीनीकरण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई**

- समग्र परिसर में अब तक लगभग 98 हजार छोटे-बड़े पेड़-पौधों के रोपण का कामकाज पूरा; मार्च 2026 तक अतिरिक्त 16 हजार पौधरोपण की योजना
- आश्रम के आगंतुक आश्रम भ्रमण के साथ उचित सेवा गतिविधियों में सहभागी बन सकें, इसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा-विमर्श
- 28 मकानों के रिस्टोरेशन कार्यों में से 22 का रिस्टोरेशन पूर्ण, मार्च 2026 तक रिस्टोरेशन कामकाज पूर्ण हो जाएगा

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में शुक्रवार को गांधीनगर में महात्मा गांधी साबरमती आश्रम मेमोरियल ट्रस्ट की गवर्निंग काउंसिल की बैठक उप मुख्यमंत्री एवं काउंसिल के वाइस चेयरमैन श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में आयोजित की गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष विजन एवं प्रेरणा से साबरमती आश्रम का आधुनिकीकरण और नवीनीकरण किया जा रहा है।

इस संदर्भ में साबरमती आश्रम में चल रहे विभिन्न कार्यों की प्रगति की समीक्षा गवर्निंग काउंसिल की इस बैठक में की गई। एग्जीक्यूटिव काउंसिल के चेयरमैन श्री आई.पी. गौतम ने विस्तृत प्रेजेंटेशन द्वारा इन कामकाज की सर्वग्राही प्रगति का विवरण दिया।

उन्होंने कहा कि इस परियोजना अंतर्गत लगभग 28 मकानों के रिस्टोरेशन का कामकाज किया जा रहा है। उनमें से 22 का कामकाज पूरा हो चुका है और संपूर्ण रिस्टोरेशन कार्य मार्च 2026 तक पूरा करने की योजना है। प्रस्तुति में बताया गया कि साबरमती आश्रम के इस नवीनीकरण में ग्रीन ग्रोथ को प्राथमिकता देने संबंधी प्रधानमंत्री के दिशानिर्देशों के अनुसार अब तक लगभग 98 हजार छोटे-बड़े पेड़-पौधों का रोपण किया जा चुका है और मार्च 2026 तक अतिरिक्त 16 हजार पौधारोपण की कार्रवाई की जा रही है ।

इस बैठक में पूज्य बापू के श्रमदान के विचार को आश्रम की गतिविधियों से जोड़ते हुए, आश्रम की यात्रा पर आने वाले आगंतुक, विशेषकर युवा, विभिन्न सेवा गतिविधियों में किस प्रकार सहभागी बन सकें, इस दिशा में भी विस्तृत चर्चा–परामर्श किया गया। इतना ही नहीं साथ ही गवर्निंग काउंसिल की पिछली बैठक के एजेंडा को भी स्वीकृति प्रदान की गई। इस बैठक में महात्मा गांधी साबरमती आश्रम मेमोरियल ट्रस्ट की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य सांसद श्री नरहरिभाई अमीन, श्री कार्तिकेय साराभाई, श्री जयेशभाई पटेल, मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, युवा, सेवा एवं सांस्कृतिक गतिविधि विभाग के सचिव डॉ. राहुल गुप्ता, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, पर्यटन सचिव श्री कुलदीप आर्य और महात्मा गांधी साबरमती आश्रम मेमोरियल ट्रस्ट के विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) श्री आई.के. पटेल उपस्थित रहे।

गरवी गुर्जरी की प्रोत्साहक पहल ने कला-कारीगरों को दिया गौरवमय मंच

गुजरात विधानसभा परिसर बना राज्य की समृद्ध कला विरासत का दर्पण

▸▸ बजट सत्र से पहले विधानसभा पर छाया परंपरागत एवं सांस्कृतिक कला-कारीगरी का रंग

▸▸ विधानसभा परिसर में अमदावादी मातानी पछेडी, कच्छी मड मिरर वर्क तथा आदिवासी वारली कला की कलाकृतियाँ बनेंगी आकर्षण का केन्द्र

▸▸ प्रजा का प्रतिनिधित्व करने वाली विधानसभा अब कला का प्रतिनिधित्व भी करेगी

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात की प्रजा का प्रतिनिधित्व करने वाली गुजरात विधानसभा अब गुजरात की प्राचीन, परंपरागत एवं समृद्ध सांस्कृतिक कला विरासत का दर्पण बनी है। आगामी 16 फरवरी से शुरू हो रहे बजट सत्र से पहले गुजरात विधानसभा परिसर राज्य की परंपरागत तथा सांस्कृतिक कला-कारीगरी के रंग में रंग गया है। बजट सत्र में आने वाले जन प्रतिनिधियों, अतिथियों तथा आगंतुकों के लिए विधानसभा परिसर की दीवारों – स्तंभों पर उकेरी गई अमदावादी मातानी पछेडी, कच्छी मड मिरर वर्क तथा आदिवासी वारली कला की लोक कलाकृतियाँ आकर्षण का केन्द्र बनेंगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकास भी, विरासत भी' विजन को साकार करने में अग्रसर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की सरकार द्वारा राज्य की परंपरागत कला-कारीगरी को जनता के प्रतिबिंब समान विधानसभा परिसर में स्थान देकर एक नूतन कदम उठाया गया है और यह कदम समग्र राज्य की परंपरागत कला संस्कृति एवं उससे जुड़े हजारों कला-कारीगरों को उनके कौशल को परंपरागत रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा देगा। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य में हस्तकला तथा हथकरघा कला-कारीगरी को निरंतर प्रोत्साहन मिलता रहा है और इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए विधानसभा परिसर को गुजरात की समृद्ध कला विरासत से रंगा गया है। राज्य में परंपरागत कला-कारीगरी को जीवंत रखने का कार्य करने वाले सरकारी उपक्रम 'गुजरात राज्य हथकरघा एवं हस्तकला विकास निगम' (जीएसएचएचडीसी) लिमिटेड का ब्रैंड 'गरवी गुर्जरी' राज्य सरकार के ऐसे सकारात्मक प्रयासों को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है और उसी की पहल ने गुजरात के हजारों कला-कारीगरों का प्रतिनिधित्व करने वाले कला-कारीगरों को विधानसभा परिसर के रूप में गौरवमय मंच दिया है। इसके चलते गांधीनगर स्थित गुजरात विधानसभा परिसर केवल शासन का केन्द्र नहीं रहा, बल्कि राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का जीवंत दर्पण बन गया है। इस पहल अंतर्गत विधानसभा परिसर के विभिन्न क्षेत्रों में गुजरात की विविधतापूर्ण एवं लोक विरासत की झाँकी कराने वाली अनूठी लोक कलाकृतियाँ उकेरी गई हैं, जो राज्य की कला-कारीगरी की विविधता तथा वैभव को प्रतिबिंबित करती हैं।

મિત્તલબેન ચિતારા - કલમકારી પેઇન્ટિંગ

कुशलता के आधार पर तीन कलाओं का चयन

गरवी गुर्जरी ने विधानसभा परिसर में राज्य की कला विरासत को प्रस्तुत करने के लिए एक सशक्त प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य किया, राज्य के प्रतिभाशाली हथकरघा-हस्तकला कारीगरों को मार्गदर्शन, प्रेजेंटेशन तथा उचित अवसर पर उपलब्ध कराया। इसके बाद गरवी गुर्जरी की टीम द्वारा कारीगरों की कला का व्यवस्थित प्रस्तुतिकरण तैयार कर पेश किया गया और उनकी कुशलता तथा कला के स्तर के आधार पर कलाओं का चयन किया गया। गुजरात विधानसभा परिसर के लिए चयनित प्रमुख लोक कलाकृतियों में (1) गुजरात का परंपरागत मड मिरर वर्क (2) छोटा उदेपुर का वारली आर्ट तथा (3) अहमदाबाद की मातानी पछेडी (परंपरागत कलमकारी कला) शामिल हैं। ये तीनों लोक कलाकृतियाँ आज विधानसभा परिसर की दीवारों तथा क्षेत्रों को सुशोभित कर रही हैं और राज्य की सांस्कृतिक पहचान को उजागर कर रही हैं।

वारली कला द्वारा प्राचीन राजसभा से आधुनिक विधानसभा तक की यात्रा दीवारों पर उकेरी गई

विधानसभा परिसर में वारली कला द्वारा प्राचीन राजसभा से आधुनिक विधानसभा तक की यात्रा तथा ग्रामीण से शहरी विकास की भावनात्मक एवं दृश्यात्मक झाँकी वारली पेंटिंग द्वारा प्रस्तुत की गई है। छोटा उदेपुर की प्रतिभाशाली वारली कारीगर अर्चनाबेन राठवा ने वारली कला का प्रदर्शन किया है। पिछले 8 वर्ष से गरवी गुर्जरी से जुड़ीं अर्चनाबेन को इस कला में वर्ष 2022 में राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। विधानसभा से पहले उन्होंने गुजरात मेडिकल डिपार्टमेंट (मेडिकल इमर्जेंसी मैनेजमेंट थीम), कमिश्नर ऑफ कॉटेज एंड रूरल इंडस्ट्रीज तथा खादी थीम जैसे प्रोजेक्ट्स पर सफल कार्य किया है।अर्चनाबेन कहती हैं, "गरवी गुर्जरी के मार्गदर्शन में विधानसभा जैसे गौरवपूर्ण प्रोजेक्ट पर काम करने का अवसर मिलना हमारे लिए गर्व की बात है।"

कच्छी मड मिरर वर्क कला से विधानसभा परिसर में सांस्कृतिक लोक कलाकृतियाँ जीवंत की गईं

અર્ચનાબેન રાઠવા - વારલી પેઇન્ટિંગ

विधानसभा परिसर में गुजरात की परंरागत कच्छी मड मिरर वर्क कला का रंग भी छाया है। इस कला को नई पहचान देने वाले गिरीशभाई ए. परमार आज इस लोक विरासत के महत्वपूर्ण कलाकार के रूप में विख्यात हैं। मुलतानी मिट्टी एवं रंगीन काँच का उपयोग कर तैयार होने वाली यह कला परंपरागत रूप से कच्छ के भूंगा (हट) घरों में देखने को मिलती थी, जिसे गिरीशभाई आधुनिक एवं प्रतिष्ठित स्थानों में सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं। वे 26 जनवरी की टैब्लो परेड में गुजरात का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं तथा सचिवालय, अन्य सरकारी कार्यालयों और गरवी गुर्जरी के लिए कई विशिष्ट प्रोजेक्ट्स उन्होंने पूरे किए हैं। गुजरात विधानसभा परिसर में कार्य करने के अवसर के बारे में गिरीशभाई कहते हैं, "मैं गरवी गुर्जरी का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे विधानसभा जैसे गौरवपूर्ण स्थान पर मेरी परंपरागत मड मिरर (लेपन) वर्क कला प्रस्तुत करने का अवसर दिया। यहाँ देशभर के अधिकारी तथा आम जनता आती है और इस स्थान पर मेरी परंपरागत कच्छी कला प्रदर्शित होना मेरे लिए गर्व की बात है।"

अमदावादी मातानी पछेडी कला ने किया परंपरा-आधुनिकता का संगम

गरवी गुर्जरी के मार्गदर्शन तथा विश्वास से चितारा परिवार ने गुजरात विधानसभा परिसर में अहमदाबाद की प्राचीन मातानी पछेडी (कलमकारी) कला प्रस्तुत करने का गौरवपूर्ण अवसर प्राप्त किया। विधानसभा की दीवारों पर मातानी पछेडी द्वारा परंपरा एवं आधुनिकता का अनूठा समन्वय प्रस्तुत किया गया है, जो सांस्कृतिक विरासत को नई दिशा देता है। इस कला को जीवंत रखने वाले और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता श्री चंद्रकांतभाई चितारा इस परंपरागत कला के विशिष्ट प्रतिनिधि के रूप में जाने जाते हैं। मातानी पछेडी कला हाल में मुख्य रूप से चितारा परिवार द्वारा ही संरक्षित एवं आगे बढ़ाई जा रही है, जो गुजरात की सांस्कृतिक विरासत का गौरवपूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रोजेक्ट में सहभागी रहीं चंद्रकांतभाई की पुत्री मित्तल चितारा कहती हैं, "विधानसभा परिसर में काम करने का अवसर हमारे लिए गौरव का क्षण है। हमारी कलमकारी कला को राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिल रही है और जब हम यहाँ दीवार पर कलमकारी पेंटिंग कर रहे हैं, तब लोग उत्साह से जुड़कर कला को निहार रहे हैं। इस कला के लिए हमें गरवी गुर्जरी के मार्गदर्शन में अच्छा-खासा प्रतिसाद मिला है।" उल्लेखनीय है कि गरवी गुर्जरी द्वारा कारीगरों को केवल बाजार तक का मंच ही नहीं, बल्कि प्रतिष्ठित सरकारी प्रोजेक्ट्स में भागीदारी के अवसर भी उपलब्ध भी कराए जा रहे हैं। इन प्रयासों से स्थानीय कारीगरों की प्रतिभा को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही है। गुजरात की प्राचीन हस्तकला आज विधानसभा जैसे गौरवशाली परिसर में जीवंत बनकर राज्य की सांस्कृतिक विरासत को नई ऊँचाइयों पर ले जा रही है। गरवी गुर्जरी का यह प्रयास राज्य की कला-कारीगरी को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है।

पश्चिम रेलवे द्वारा 19 फरवरी, 2026 से 12 अतिरिक्त एसी लोकल तथा 3 नॉन-एसी ट्रेन सेवाओं की शुरुआत

पश्चिम रेलवे पर कुल लोकल सेवाओं की संख्या होगी 1414

जीएनएस)। मुंबई उपनगरीय नेटवर्क पर यात्री सेवाओं को और सुदृढ़ करते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा 19 फरवरी, 2026 से 12 अतिरिक्त एसी लोकल ट्रेन सेवाएं तथा 3 नई नॉन-एसी सेवाएं शुरू की जाएंगी।

वातानुकूलित यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए तथा आम यात्रियों के लिए किफायती विकल्पों की निरंतर आवश्यकता को स्वीकार करते हुए, पश्चिम रेलवे संतुलित एवं समावेशी आवागमन अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य रखती है। सेवाओं में यह वृद्धि भीड़भाड़ कम करने तथा यात्रियों को बेहतर यात्रा अनुभव प्रदान करने में सहायक होगी।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क विभाग द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 12 एसी लोकल सेवाएं शुरू की जा रही हैं, जिनमें से 11 सेवाएं मौजूदा नॉन-एसी सेवाओं के स्थान पर संचालित की जाएंगी, जबकि एक सेवा नई एसी सेवा होगी। इसके अतिरिक्त, तीन नई नॉन-एसी सेवाएं भी शुरू की जा रही हैं। इस वृद्धि के साथ एसी सेवाओं की कुल संख्या 121 से बढ़कर 133 हो जाएगी तथा पश्चिम रेलवे नेटवर्क पर कुल

लोकल सेवाओं की संख्या 1410 से बढ़कर 1414 हो जाएगी। शनिवार एवं रविवार को संचालित एसी सेवाओं की संख्या भी 77 से बढ़कर 106 हो जाएगी, जिससे विकेंड में यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए अधिक आराम और क्षमता उपलब्ध होगी। इसके अलावा, वर्तमान में भायंदर से बांद्रा के बीच संचालित एक स्लो लोकल सेवा को अब विरार से संचालित किया जाएगा, जिससे यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा एवं बेहतर संपर्क उपलब्ध होगा।

यह पहल मुंबई की जीवनरेखा कही जाने वाली उपनगरीय रेल सेवाओं में अधिक सुरक्षित, कुशल एवं यात्री-अनुकूल सेवाएं प्रदान करने की पश्चिम रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद के नागरिकों के लिए 28 नई इलेक्ट्रिक बसों का लोकार्पण किया

▸▸ मुख्यमंत्री द्वारा प्रस्थान कराई गईं नई 28 ई-बसें साइबर सिक्योरिटी तथा फायर सेफ्टी सिस्टम से सज्ज

▸▸ बहुत ही कम समय में पूर्ण हुए ई-बस प्रोजेक्ट से एएमटीएस के बेड़े में ग्रीन मोबिलिटी का नया अध्याय शुरू

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद महानगर पालिका (मनपा) की जीवनडोर समान अहमदाबाद महानगर पालिका परिवहन सेवा (एएमटीएस) के बेड़े में 28 नई अत्याधुनिक इलेक्ट्रिक बसों का शुक्रवार को लोकार्पण किया।

एएमटीएस में समय-समय पर कुल 225 नई ई-बसों को जोड़ा जाना है और इसके साथ ही नगरजनों को अधिक सुविधाजनक एवं ग्रीन परिवहन प्राप्त होगा। इन 225 ई-बसों के संचालन से प्रतिवर्ष लगभग 75000 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी होगी। यह प्रोजेक्ट देश के सबसे तेज क्रियान्वयन वाले प्रोजेक्ट्स में एक है, जिसमें पूरी निविदा प्रक्रिया केवल 6 महीनों में पूरी कर केवल 3 महीनों में बसों की डिलीवरी सुनिश्चित की गई है।

यात्रियों की सुरक्षा के मामले में ये बसें देश में अद्वितीय हैं। देश में पहली बार इलेक्ट्रिक बसों में अनिवार्य साइबर सिक्योरिटी तथा सेफ्टी ऑडिट को लागू किया गया है। इसके अलावा, हर बस में फायर डिटेक्शन एंड सप्रेशन

सिस्टम (एफडीएसएस) कार्यरत कर यात्रियों की सुरक्षा का ध्यान रखा गया है।

इस अवसर पर शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, उप महापौर श्री जतिन पटेल, स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांगभाई दाणी, शासक पक्ष के नेता श्री गौरांगभाई प्रजापति, सचेतक श्रीमती शीतल डागा, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, स्थानीय विधायक, एएमटीएस अध्यक्ष श्री धरमशीभाई देसाई, मनपा एवं एएमटीएस के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

सोना वायदा में 1292 रुपये और चांदी वायदा में 8167 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा में 40 रुपये की वृद्धि

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 133755.21 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 22993.93 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 110759.79 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 38070 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1866.19 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 17069.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 153750 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 154837 रुपये और नीचे में 153368 रुपये पर पहुंचकर, 152836 रुपये के पिछले बंद के सामने 1292 रुपये या 0.85 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 154128 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 803 रुपये या 0.64 फीसदी की बढ़त के साथ 125780 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 94 रुपये या 0.6 फीसदी की बढ़त के साथ 15772 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 152588 रुपये के भाव पर खूलकर, 152799 रुपये के दिन के उच्च और 151266 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1427 रुपये या 0.95 फीसदी की बढ़त के साथ 152115 रुपये प्रति 10

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 22993.93 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 110759.79 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 17069.81 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38070 पॉइंट के स्तर पर

ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 154871 रुपये के भाव पर खूलकर, 155600 रुपये के दिन के उच्च और 153889 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 153663 रुपये के पिछले बंद के सामने 1016 रुपये या 0.66 फीसदी की बढ़त के साथ 154679 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 239626 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 248786 रुपये और नीचे में 239602 रुपये पर पहुंचकर, 236435 रुपये के पिछले बंद के सामने 8167 रुपये या 3.45 फीसदी बढ़कर 244602 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 6477 रुपये या 2.66 फीसदी की मजबूती के साथ 249801 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 6515 रुपये या 2.68 फीसदी की तेजी के संग 249982 रुपये प्रति किलो हुआ। मेटल वर्ग में 3900.49 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 25 पैसे या 0.02 फीसदी टूटकर 1206.05 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 2.75 रुपये या 0.85 फीसदी की गिरावट के साथ 320.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 10 पैसे या 0.03 फीसदी की नरमी के साथ 307.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 15 पैसे या 0.08 फीसदी की नरमी के साथ 187.65 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1504.12 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा 5661 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5732 रुपये और नीचे में 5647 रुपये पर पहुंचकर, 40 रुपये या 0.7 फीसदी बढ़कर 5726 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 37 रुपये या 0.65 फीसदी की मजबूती के साथ 5726 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 291.1 रुपये के भाव पर खूलकर, 291.1 रुपये के दिन के उच्च और 283.7 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 294.2 रुपये के पिछले बंद के सामने 7.7 रुपये या 2.62 फीसदी की गिरावट के साथ 286.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 8 रुपये या 2.72 फीसदी घटकर 286.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 965 रुपये पर खूलकर, 1.1 रुपये या 0.11 फीसदी गिरकर 965.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 8505.11 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8564.70 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 3216.17 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 242.05 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 13.14 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 415.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 567.76 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 922.04 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 0.45 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9050 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 64730 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 33045 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 432250 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 58157 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8559 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19110 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 64214 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18751 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 23174 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 38085 पॉइंट पर खूलकर, 38214 के उच्च और 37970 के नीचले स्तर को छूकर, 1192 पॉइंट घटकर 38070 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 3.2 रुपये की गिरावट के साथ 105.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.7 रुपये की गिरावट के साथ 15.5 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 343.5 रुपये की गिरावट के साथ 590.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1508.5 रुपये की बढ़त के साथ 13507 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5 पैसे के सुधार के साथ 17.21 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3 पैसे के सुधार के साथ 0.77 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 35.1 रुपये की गिरावट के साथ 88.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.85 रुपये की बढ़त के साथ 12.8 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 664.5 रुपये की गिरावट के साथ 2701 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 231 रुपये की गिरावट के साथ 470.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.53 रुपये की बढ़त के साथ 8.99 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2 रुपये की बढ़त के साथ 5 रुपये हुआ।